

प्रेस विज्ञप्ति

डॉ. रूपमंजरी हेगड़े ने 'क्लासरूम, करिकुलम एंड सिटीजनशिप' पर दिया व्याख्यान

नई दिल्ली, 01 अगस्त, 2025

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के डॉ. के. आर. नारायणन दलित एवं अल्पसंख्यक अध्ययन केंद्र ने कल बेंगलुरु स्थित अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय की डॉ. रूपमंजरी हेगड़े का व्याख्यान आयोजित किया। "स्कूलिंग, टेक्स्टबुक्स एंड कंस्ट्रक्शन्स ऑफ़ सिटीजनशिप्स" पर यह व्याख्यान डॉ. बी. आर. अम्बेडकर स्मारक व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत आयोजित किया गया था।

व्याख्यान की अध्यक्षता डॉ. के. आर. नारायणन दलित एवं अल्पसंख्यक अध्ययन केंद्र की निदेशक प्रोफेसर हलीमा सादिया रिज़वी ने की। कार्यक्रम समन्वयक प्रोफेसर पद्मनाभ समरेंद्र ने उद्घाटन वक्तव्य दिया और वक्ता का परिचय कराते हुए शिक्षा एवं पाठ्यक्रम अध्ययन के क्षेत्र में उनके योगदान पर प्रकाश डाला।

अपने शोध के आधार पर, डॉ. हेगड़े ने बताया कि कैसे पाठ्यपुस्तकों और कक्षा प्रक्रियाओं ने ऐतिहासिक रूप से भारत में नागरिकता की अवधारणा को आकार देने में योगदान दिया है। उनकी प्रस्तुति ने औपनिवेशिक काल से लेकर स्वतंत्रता के बाद के दशकों तक स्कूली पाठ्यपुस्तकों के विकास पर चर्चा की, जिसमें 2000 के दशक के आरंभ तक की विषयवस्तु और शैक्षणिक बदलावों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

उन्होंने औपनिवेशिक शासन के तहत जन शिक्षा की नींव की जाँच से शुरुआत की। एक प्रमुख उदाहरण विलियम ली-वार्नर द्वारा लिखित "द सिटीजन ऑफ़ इंडिया" था, जो भारतीय छात्रों में नागरिक मूल्यों का संचार करने के लिए प्रस्तुत की गई एक पुस्तक थी। डॉ. हेगड़े ने बताया कि ऐसी पुस्तकें तटस्थ नहीं होतीं। उनका उद्देश्य औपनिवेशिक सत्ता द्वारा परिभाषित नागरिकता के कुछ आदर्शों को विकसित करना था, जिनमें निष्ठा, अनुशासन और सामाजिक अनुरूपता शामिल थी। उन्होंने कहा कि यह शिक्षा के माध्यम से शासन करने की एक व्यापक रणनीति का हिस्सा था।

इसके बाद बातचीत स्वतंत्रता के बाद के दौर में चली गई, जहाँ डॉ. हेगड़े ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) जैसी राष्ट्रीय एजेंसियों के माध्यम से पाठ्यक्रम डिजाइन के विकास का विश्लेषण किया। उन्होंने दिखाया कि कैसे प्रारंभिक एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों का उद्देश्य नागरिक समझ की साझा भावना को बढ़ावा देना था। उन्होंने कहा कि समय के साथ, पाठ्यक्रम विकास के भीतर धीरे-धीरे भारतीय समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता को प्रतिबिंबित करने के प्रयास किए गए। उनका शोध उन बदलावों की ओर ध्यान आकर्षित करता है जिनकी परिणति राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में हुई, जिसने पाठ्यपुस्तक लेखन के लिए एक अधिक चिंतनशील आधार प्रदान किया।

उनके व्याख्यान का एक प्रमुख हिस्सा इस बात पर केंद्रित था कि कैसे पाठ्यपुस्तकें, दशकों से संशोधनों के बावजूद, प्रमुख सामाजिक दृष्टिकोणों को प्रतिबिंबित करती रहती हैं। डॉ. हेगड़े ने इस बात पर प्रकाश डाला कि यद्यपि विषयवस्तु विकसित हो सकती है, उस विषयवस्तु की दैनिक व्याख्या शिक्षक पर बहुत अधिक निर्भर करती है। शिक्षक सूचना के निष्क्रिय संवाहक नहीं हैं। वे अपने स्वयं के

अनुभव, सामाजिक स्थितियाँ और पूर्वाग्रह कक्षा में लाते हैं। परिणामस्वरूप, शिक्षक के दृष्टिकोण और विधियों के आधार पर, एक ही पाठ को बहुत अलग तरीकों से प्रस्तुत किया जा सकता है।

पूरे व्याख्यान के दौरान, डॉ. हेगड़े ने इस बात पर ज़ोर दिया कि पाठ्यपुस्तकें केवल शैक्षिक उपकरण ही नहीं हैं। वे ऐसे माध्यम हैं जिनके माध्यम से मूल्यों, सामाजिक मानदंडों और सामूहिक कल्पना का संचार होता है। उनका शोध पाठ्यपुस्तकों में क्या कहा गया है, उन्हें कैसे पढ़ाया जाता है और छात्रों द्वारा उन्हें कैसे ग्रहण किया जाता है, इस पर गहन विचार करने का आग्रह करता है। उन्होंने श्रोताओं को पाठ्यपुस्तकों को राजनीतिक और सांस्कृतिक पाठ्य के रूप में देखने के लिए आमंत्रित किया जो युवा मन की नैतिक और नागरिक कल्पना को आकार देने में मदद करते हैं।

अपने समापन भाषण में, प्रोफ़ेसर हलीमा सादिया रिज़वी ने कहा कि इस व्याख्यान ने पाठ्यपुस्तकों में निहित मौन पाठ्यक्रम के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्नों को उजागर किया, और इस बात पर विचार करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता को उजागर किया कि दैनिक स्कूली शिक्षा में ज्ञान को कैसे तैयार और प्रस्तुत किया जाता है।

सत्र एक रोचक चर्चा के साथ समाप्त हुआ। यह व्याख्यान केंद्र के उन अंतःविषय स्कॉलर्स की मेज़बानी करने के व्यापक प्रयास का हिस्सा था, जिनका कार्य इस बात पर प्रकाश डालता है कि ज्ञान की संरचनाएँ हाशिये पर पड़े जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी